Conclusion

उपसंहार

बीसवीं शताब्दी में, आधुनिक हिन्दी साहित्य में, जिन कवियों ने हिन्दी कविता के विकास में विशिष्ट उपलब्धियों का परिचय दिया है, उन कवियों में भारतीय संस्कृति के अद्वितीय उद्गाता, राष्ट्रीय चेतना के महान उत्प्रेरक श्री मैथिलीशरण गुप्त का नाम शीर्षस्थ है. वे द्विवेदीयुग के प्रतिनिधि एवं प्रसिद्ध कवि हैं.

उन्होंने सन् 1901 से लेकर सन् 1960 तक अनवरत रूप से साहित्य-सेवा की है. उनकी प्रतिभा कौमुदी का आलोक द्विवेदीयुग से लेकर प्रयोगवाद -नयी कविता तक प्रशस्त है. इस दीर्घ कालावधि में गुप्तजी ने महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य आदि की रचना की है. भारतीय साहित्य का मूल स्त्रोत भागवत-पुराण, रामायण-महाभारत है. गुप्तजी ने भी इन्हीं अमर ग्रन्थों से प्रेरणा लेकर युगीन संदर्भ में काव्य रचनायें प्रस्तुत की हैं. यही कारण है कि उन्होंने तम तथा आलोक, देव और असुर, सत्य एवम् अनृत की कथाओं को अपने काव्य के मूलाधार रूप में स्वीकार किया है.

पुनरुत्थान का आन्दोलन भारत में, भारत और यूरोप के संपर्क के साथ, आरम्भ हुआ था. इस आंदोलन से केवल यूरोपीय विचार ही भारत में नहीं आये, बल्कि इस देश के प्राचीन विचारों में भी नवीनता आई. इस आंदोलन से प्राचीन कथाएँ एवं उनके नायक-नायिका आदि नयी ज्योति से जगमगाने लगे. केशवचन्द्र सेन, स्वामी दयानन्द सरस्वती, परमहंस रामकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, महादेव गोविंद रानडे, श्रीमती एनी बीसेंट, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, योगी अरविन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी आदि ने माना की भारत की प्रजा वेद-उपनिषदों से भाग नहीं सकती. इसका कारण यह है कि वेद एवं उपनिषदों में समग्र इतिहास तथा संस्कृति का निचोड़ है. किन्तु प्रत्येक का यह भी मत था कि इस प्राचीन ज्ञान का सामंजस्य हमें नवीन ज्ञान से बिठाना चाहिए. अर्थात्, प्राचीन भारत और नवीन यूरोप के समास से जो व्यक्तित्व उत्पन्न होगा, वही आगामी भारत का व्यक्तित्व होगा. इसका परिणाम यह हुआ कि पुराणों

के कितने ही प्रसंग एवं इतिहास के अनेक नायक आदि नयी व्याख्याओं के कारण नवीन हो उठे, तथा वे हमारे अधिक निकट आ गये. इस आंदोलन का प्रभाव भारतेन्दु से लेकर आजतक के अधिकांश लेखकों और कवियों की कृतियों में मिलता है. पुनरुत्थान के इस आन्दोलन ने हमारी सारी संस्कृति और संपूर्ण इतिहास को नया आलोक प्रदान किया है. इसकी अभिव्यक्ति सर्वप्रथम मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में हुई है. इसलिए मैथिलीशरणजी हिन्दी में पुनरुत्थान के कवि हैं. उनकी रचनाओं में द्विवेदीयुग की चेतना और जागरण की छाप स्पष्ट है. अतीत भारत के गौरवपूर्ण, उदात्त और प्रेरक चित्रों का चित्रण गुप्तजी ने अनेक कृतियों में किया है. वे हिन्दू संस्कृति एवं वैष्णव भावना से प्रभावित थे, फिरभी उनके चित्रणों में संकीर्णता नहीं है. बौद्ध, सिक्ख, मुस्लिम आदि धर्मों के महान चरित्रों से उन्होंने प्रेरणा प्राप्त की है.

इस काल में सांस्कृतिक पुनरुत्थान हुआ, जिसके फलस्वरूप अनेक आन्दोलन हुए. प्रत्येक आंदोलन से प्रभावित होकर लिखे गये साहित्य में विशेष विचारधारा का प्रतिपादन एवं आधुनिक और प्राचीन विचारों का समन्वय भी हुआ है. भारतेन्दु युग में प्राचीन आख्यानों के प्रति मोह रहा, लेकिन द्विवेदीयुग में प्राचीन आख्यानों की परम्परा ~~और कथा~~ में युगीन विचारधारा के प्रतिपादन के लिए चारित्रिक और कथात्मक परिवर्तन की प्रणाली का उदय हुआ. इन आख्यानों की परम्परा में दो प्रकार के काव्य हैं - एक तो प्राचीन कथागत और विचारगत तत्वों को यथावत स्वीकार करनेवाले प्रबन्धकाव्य और दूसरे वे हैं जिनमें प्राचीन कथा और विचारों में बौद्धिक एवं युगीन दृष्टिकोण का समावेश किया गया है. हमारे आलोच्य कवि मैथिलीशरण गुप्त की अधिकांश रचनाएँ दूसरे प्रकार की हैं.

महाभारत से प्रेरित होकर गुप्तजी ने एकाधिक कृतियों का सृजन किया है. " सैरन्ध्री " में सतीत्व की रक्षा और धर्मनिष्ठा का उत्कर्ष

दिखाकर पाप-वृत्ति का विनाश निरुपित किया है. यहाँ कवि ने सत्य की विजय एवं असत्य की पराजय दिखाकर उच्च धर्म की प्रतिष्ठा की है. मुख्य घटना के आधार पर कवि ने " वक संहार " का नामकरण किया है. किन्तु यहाँ कवि का प्रतिपाद्य अतिथि एवं आतिथेय धर्म का प्रतिपादन रहा है. कवि वीरत्व का आदर्श प्रस्तुत करने में उतने प्रवृत्त नहीं हुए हैं, जितने कुन्ती के दानशील चरित्र के आख्यान में हुए हैं. यह काव्य सूच्य शैली में लिखा गया है. इसमें कवि ने त्याग के पारिवारिक आदर्श को उच्चता की पराकाष्ठा से चित्रित किया है. कुन्ती का अन्तर्द्वन्द्व " वकसंहार " की विशेषता है. " महाभारत " में इस द्वन्द्व का चित्रण नहीं हुआ है, क्योंकि " महाभारत " की कुन्ती अपने पुत्रों के दिव्य बल से परिचित है. कवि ने यहाँ कुन्ती को एक सामान्य नारी के रूप में चित्रित किया है. " वन वैभव " में कवि ने दुर्योधन के वन के वैभव को चित्रित किया है, किन्तु उनकी मान्यता है कि वास्तविक वैभव तो मन की उच्चता और आदर्शों की सात्विकता में है. यह वैभव युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ है. युधिष्ठिर अपने धर्म की रक्षा करता है और मानवता के आदर्श का भी पालन करता है. कवि का उद्देश्य युधिष्ठिर के चरित्र की प्रतिष्ठा करना है. कवि ने धर्म और कर्तव्य-पालन के लिए युद्ध की अनिवार्यता को भी स्वीकार किया है. प्रतिशोध का सात्विक आचरण कवि ने यहाँ प्रस्तुत किया है. यहाँ कवि की जीवन दृष्टि अभिव्यक्त हुई है. " नहुष " का उद्देश्य " काम का विरोध " है. कवि के मतानुसार असंयमित काम मानव जीवन के लिए घोर कलुष है. असंयम से स्वत्व की रक्षा करने पर ही स्वर्ग एवं अपवर्ग प्राप्त हो सकते हैं. गुप्तजी ने " हिडिम्बा " को राक्षसी के रूप में चित्रित नहीं किया है बल्कि उसे वैष्णवी मानवी के रूप में चित्रित किया है. कुन्ती एवं हिडिम्बा के वार्तालाप से कवि ने आर्य-अनार्य, मानवता-राक्षसत्व, त्याग-प्रेम आदि विषयों पर अपने युग सापेक्ष विचार व्यक्त किये हैं. कवि ने इस काव्य को वर्णनात्मक शैली में लिखा है. इसमें कवि ने स्त्री के मातृत्व की सुन्दर अभिव्यंजना की है. इसमें मुखरित प्रेमाभिव्यक्ति को भी अत्यन्त संयमित रूप दिया गया है. इसकाव्य का

का उद्देश्य यह है कि प्राणी मात्र से प्रेम करना चाहिए और समानता का व्यवहार करना चाहिए. कवि ने कर्मणा जाति का समर्थन किया है. कथा विकास में अन्तर्कथाओं के संगुम्फन को प्रमुखता दी गई है. कवि ने प्रासंगिक वृत्तों की सूचना देकर मूल कथा के तत्व को शीघ्रता से ग्रहण कर लिया है. संक्षेप में, कवि ने " महाभारत " की बृहत्कथा से प्रेरणा ली है लेकिन उसे अपनी कल्पना के द्वारा सुचारु, सरस एवं काव्यात्मक रूप दिया है. समस्त कथांश ज्यों के त्यों नहीं रखे गये हैं वरन् उनको वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में ही स्वीकार किया है. " जयभारत " के कृष्ण भी देव न होकर मनुष्य के रूप में ही हमारे समक्ष आते हैं. वे कहीं भी अतिमानवीय कार्य नहीं करते हैं. उनकी कुन्ती और द्रौपदी असामान्य होकर भी सामान्य है. युधिष्ठिर मानवतावाद की प्रतिष्ठा से सम्पन्न है. कर्ण पश्चाताप दग्ध और दुःशासन का हृदय भ्रातृभक्ति से भरा हुआ है. दुर्योधन में धैर्य एवं अडिगता आदि मानव सुलभ गुण-अवगुण हैं. कवि ने अनेक दोषों का परिहार किया है. और उन्हें मानवोचित बनाया है.

कवि के पिता प्रति सप्ताह " रामचरित मानस ", " विनय पत्रिका " तथा "अध्यात्म रामायण " का पाठ करते थे. उनकी भगवद्-भक्ति का गुप्तजी पर गहरा प्रभाव पड़ा है. वे बचपन से रामनाम जपते थे. उनकी यह भक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गई. राम और सीता उनके इष्टदेव थे. कविवर की रचनाओं में राम की भक्ति को सर्वोपरि माना है. इष्टदेव राम के प्रति कवि की अटूट श्रद्धा प्रकट हुई है. " द्वापर " काव्य श्रीमद्भागवत से प्रभावित कृति है और इसमें कवि ने श्री कृष्ण का स्तवन किया है. किंतु कवि राम के अनन्य प्रेम को भूल नहीं पाये हैं. " द्वापर " के मंगलाचरण में यह भाव व्यक्त हुआ है. " यशोधरा " में भी राम का मंगलाचरण है. " जयभारत " में कौरव, पाण्डव और श्री कृष्ण की कथा वर्णित है परन्तु इसके मंगलाचरण में राम का स्तवन किया गया है. राम के साथ उनकी इष्टदेवी सीता को भी कवि कैसे भूल सकते ? " शक्ति " में कवि ने सीता का

स्तवन किया है. यहाँ कवि की आस्था अपनी इष्टदेवी के प्रति अभिव्यक्त हुई है. " रंग में भंग " कृति में रामनाम को श्रद्धा समेत प्रणाम किया है और साहित्य सृजन की कामना की है.

" विष्णुप्रिया " में " राम कृष्ण हो तो फिर दुर्लभ है क्या कहाँ " कहकर कवि ने अपने आराध्य के प्रति आभार प्रदर्शित किया है. " पंचवटी " में कवि के प्रौढ कवित्व के दर्शन होते हैं . यहाँ कवि ने लक्ष्मण के चरित्र को नूतन रूप दिया है. इसमें राम के आदर्श कुटुम्ब का रूप मिलता है. इस काव्य का आरंभ प्रकृति के मनोहर वर्णन से हुआ है. इसके पूर्व कवि को प्रकृति उतनी प्रिय नहीं थी. " साकेत ", " यशोधरा " में प्रकृति अपेक्षाकृत अधिक गंभीर है. " साकेत " हिन्दी का प्रसिद्ध महाकाव्य है. खड़ी बोली के आन्दोलन के साथ " साकेत " में दलितों एवं उपेक्षितों को भी महत्व दिया गया. युग-प्रवर्तक महावीरप्रसाद द्विवेदी ने अपने युग के कवियों का ध्यान भारत की उपेक्षिताओं की ओर आकृष्ट किया. जिसके फलस्वरूप काव्य में ऐसे उपेक्षित पात्रों का चरित्र किया गया.

वियुक्ता उर्मिला " साकेत " प्रबन्धकाव्य की नायिका है. कुलगुरु वाल्मीकि, गोस्वामी तुलसीदास ने जिस पात्र का तिरस्कार किया था, जिसके प्रति एक वाक्य भी नहीं लिखा. ऐसी युग युगों से उपेक्षित,दलित एवं पीड़ित नारी को अपने महाकाव्य की नायिका बनाना, कवि की एक सिद्धि है. समाज के इस अछूते अंग का कवि ने अपनी लेखनी से उद्घाटन किया है. इसकी कहानी साधु भरत और वियुक्ता ऊर्मिला की है. उर्मिला के जीवन की समस्त घटनाएँ कवि कल्पना की सृष्टि है. इसके अलावा कवि ने युग-युग से कलंकित कैकयी के कलंक का भी प्रक्षालन किया है. चित्रकूट की सभा में कैकयी द्वारा दी गई सफाई में मनोवैज्ञानिकता का उत्कर्ष देखने को मिलता है. " साकेत " के भरत और ऊर्मिला का चरित्र नितांत नवीन

नहीं है, परन्तु कवि ने राम-सीता के स्थान पर भरत और ऊर्मिला के जीवन-सूत्रों से कथातन्तु का निर्माण किया है. यह एक नवीन प्रवर्तन है. और विचारों की दुनिया में एक अभिनव क्रांति. इस नवीनता को साकेत " की आधुनिकता कहा जाय तो अनुचित नहीं है.[1] " साकेत " की सीता भी स्वावलम्बिनी है. गुप्तजी ने सीता के हाथों में चरखा और तकली के साथ खुरपी एवं कुदाली भी दी है. उनके राम और सीता आराध्य और आराध्या है किन्तु कवि ने उनको मानवीय धरातल पर चित्रित किया है. " साकेत " हिन्दी की प्रथम मानवतावादी या आदर्श मानवतावादी रचना है. यहाँ ईश्वर की मानवता नहीं बल्कि मानव की ईश्वरता का निरूपण हुआ है. यह दार्शनिक दृष्टि से आधुनिक युग की वस्तु है. इसमें कवि ने प्रथमबार मानव का उत्कर्ष अपनी चरम-सीमा पर ईश्वर के समकक्ष लाकर रखा है ।[2]
ऐसा मध्ययुग में असम्भव होने से इसे आधुनिक युग की देन कहा जा सकता है. इसका समस्त जीवन-विवरण हमारे साधारण पारिवारिक जीवन के साथ मिला जुला प्रतीत होता है. गुप्तजी की विशिष्टता यह है कि उन्होंने राम के पौराणिक आख्यान के अलौकिक एवं अति मानवीय पक्षों को आधुनिक युग की लोक- रुचि के अनुकूल स्वाभाविक और लौकिक रुप दिया है.

उनके साहित्य के पात्र अज्ञात एवं अख्यात भी हैं तो महामहिम महीप भी हैं. कवि ने इतिहास को लेकर भी अनेक रचनाएँ लिखी हैं. इतिहास में भूतकालीन तथ्यों का कालक्रम के अनुसार संग्रह होता है. लेकिन कवि ने इन्हीं तथ्यों को कवि कल्पना से रंजित कर काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किये हैं. जिससे वे तथ्य शुष्क न रहकर रसात्मक बन गये हैं. ऐसा करते समय कवि ने इस बात का ध्यान रखा है कि इतिहास की घटनाओं में क्रमभंग या सत्याभाव न आ जाये.

" रंग में भंग " उनकी ऐतिहासिक रचना है. कवि ने टॉड कृत " राजस्थान का इतिहास " से आधार लेकर कथा को नूतन परिवेश प्रदान

---

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य- नन्ददुलारे वाजपेयी, पृ. 99
2. वही, पृ. 97

किया है, जिसके द्वारा मातृभूमि के प्रति आस्थापूर्ण प्रेम तथा राष्ट्रीय आत्म-सम्मान की भावना प्रतिष्ठित हो सकी है. " रंग में भंग " के पश्चात " पत्रावली ", " विकट भट " , " यशोधरा ", " सिद्धराज " " काबा और कर्बला ", " गुरुकुल " आदि ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर लिखी गई रचनाएँ हैं.

" पत्रावली " में पृथ्वीराज, औरंगजेब, राणा प्रताप, अहिल्याबाई, शिवाजी, रानी रुपमती तथा रानी सीसोदिनी के पत्र हैं, जो ओजपूर्ण शैली में लिखे गये हैं. " विकट भट " राजपूत इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना के आधार पर लिखी गई रचना है. इसमें राजपूती आनबान, अभिमान तथा वीरत्व का ओजस्वी वर्णन हुआ है. " यशोधरा " का पूर्वार्द्ध इतिहास प्रसिद्ध है. इसका उत्तरार्द्ध कवि की कल्पना पर आधारित है. " सिद्धराज " गुजरात के राजा सिद्धराज जयसिंह के जीवनवृत्त से सम्बन्धित खण्डकाव्य है.

" काबा और कर्बला " की कथा मुस्लिम इतिहास से सम्बन्धित है. इसमें ऐतिहासिकता कम है, कवि का उद्देश्य प्रबल रहा है. " गुरुकुल " में गुरुनानक से लेकर बन्दावैरागी तक के सिक्ख गुरुओं के जीवन-चरित्र का वर्णन है. " अर्जन और विसर्जन " ईसाई- संस्कृति मूलक दो काव्यों का संग्रह हैं. इन दोनों का संदेश पृथक्-2 है. " अर्जन " में कवि ने अधर्म की कमाई की निन्दा की है तथा " विसर्जन " की ऐतिहासिक कथा में कवि ने स्वतंत्रता के महत्व का प्रतिपादन किया है.

द्विवेदीयुग की कविता में राष्ट्रीय चेतना का स्वर अधिक तीव्र है. इस युग में राजभक्ति नगण्य थी. भारतेन्दुयुग में देशभक्ति के साथ राजभक्ति का स्वर भी गूंजता है. लेकिन राजनीतिक क्षेत्र में अवरोधता और उत्तेजना आने से हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना दृढ़ एवं सतेज हुई. राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति देशभक्ति में हुई है. यह देश भक्ति हिन्दी काव्य में कई रुपों में बही हैं. उसमें सर्वप्रथम है अतीत का गौरव गान. अतीत के

गौरवगान ने राष्ट्रीयता के सांस्कृतिक पक्ष को स्पष्टित किया है. उसके भीतर की हीनता की भावना दूर करने के और देश के उद्धार के लिए सक्रिय होने की प्रेरणा दी है. अतीत के गौरवमय पृष्ठ भीतर की हीनता की भावना दूर करने के लिए अनावृत्त हुए हैं. मैथिलीशरण गुप्त के काव्यों में राष्ट्रीयता की भावना को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ है. गुप्तजी ने आजीवन राष्ट्रीय भावों- विचारों को जन-जन के जीवन में बहाया है. उन्होंने अपने उज्ज्वल अतीत की महिमा का गान किया है. " भारत-भारती " के द्वारा कवि ने देशवासियों का ध्यान वर्तमान दुर्दशा की ओर आकृष्ट किया. यह अतीत गौरवगान की सर्वोत्कृष्ट एवं सुप्रसिद्ध रचना है. इसका प्रेरणा स्त्रोत मौलाना हाली का मुसद्दस है. हाली के मुसद्दस को लक्ष्य कर कुर्री सुदौली के अधिपति राजा रामपालसिंह ने मैथिलीशरण गुप्त को इस ढंग की पुस्तक लिखने की प्रेरणा दी. इस रचना के द्वारा कवि ने भारत के अतीत गौरव का गहन दर्शन कराया और हिन्दू जाति को उत्थान का संदेश दिया. कवि ने हिन्दुओं की सुषुप्त राष्ट्रीय भावना को जाग्रत किया. कवि ने भूत-दर्शन ही नहीं कराया, वर्तमान और भविष्य की समस्याओं पर भी विचार किया है. उस समय - " भारत-भारती " देशप्रेमी नवयुवकों का कण्ठहार थी. मुसद्दस मुसलमानों का जातीय बाइबिल है, तो " भारत-भारती " हिन्दुओं की गीता सिद्ध हुई है. पं. विश्वनाथ--प्रसाद मिश्र के मतानुसार " भारत-भारती " का रचयिता " विश्वभारती का उपासक " बन सका है. इस काव्य के अतीत-दर्शन ने राष्ट्रीय चेतना को संगठित किया है.

अतीत का गौरवगान, दैवीकरण आदि देश-प्रेम के प्रबल रूप है, जिससे राष्ट्रीय चेतना को बल मिला है. इस युग की राष्ट्रप्रेम विषयक कविताओं ने राष्ट्रीयता की भावना को अखण्डता देकर उसे जीवन की क्रांति एवं बलिदान का तेज दिया है. जिससे उसका निरन्तर विकास होता रहा है. इस युग की काव्यधारा का मूलस्वर राष्ट्रीय है. सामाजिक चेतना का उद्रेक

भी इस काव्य में हुआ है. इसी सामाजिक चेतनाधारा को ध्यान में रखकर डा० सुधीन्द्र ने लिखा है, - " सम्पूर्ण हिन्दी कविता की परम्परा में यदि किसी काल की कविता पूर्ण समाजदर्शी होने का धर्म पालन करती है तो वह द्विवेदीकाल की कविता । " [1] इस काल की कविता जीवन की कविता है. इसलिए राष्ट्र के परतन्त्र जीवन की अभिव्यक्ति उसमें हुई और मुक्ति के लिए आकुल प्राणों की हुंकार की गूंज भी उसमें सुनाई देती है. गुप्तजी ने " भारत-भारती " तथा अन्य कृतियों में सामाजिक अव्यवस्थाओं का बड़ा मर्मवेधी चित्र खींचा है. समाज की कुरीतियों पर कवि का ध्यान गया है. उसने उसकी आलोचना की है. और आदर्श का संकेत किया है. " वैतालिक " के द्वारा कवि ने भारतवासियों को प्रगति की ओर उन्मुख किया और भारतीय संस्कृति का पाश्चात्य संस्कृति के साथ सामंजस्य स्थापित किया है.

" किसान " में कवि ने किसानों की दयनीय दशा पर क्षोभ प्रकट किया और दुःख एवं दारिद्र्य को उत्पन्न करनेवाली शोषण- पद्धति को समाप्त करने की भी प्रेरणा दी है. " स्वदेश- संगीत " के द्वारा परतंत्र भारतवासियों को नवजागरण का संदेश दिया है. " हिन्दू " में कवि ने राष्ट्रव्यापी जड़ता, वैयक्तिक निश्चेष्टता, धार्मिक असहिष्णुता, जातिगत अनुदारता आदि को उतार फेंकने की प्रेरणा प्रदान की है. " शक्ति " में " संघे शक्ति कलियुग " के मूलमंत्र को जन-जीवन में व्यापक बनाने का प्रयास किया है और सम्पूर्ण राष्ट्र को निजी शक्ति संचय करने में के लिए कहा है. " वन वैभव " में हिन्दू-मुस्लिम एकता की समस्या का पौराणिक आधार पर समाधान प्रस्तुत किया गया है. कवि ने साम्प्रदायिक संघर्ष को दूर करने के लिए और दोनों जातियों को एक होकर अपने शत्रु से लोहा लेने के लिए प्रोत्साहित किया है.

" वक- संहार " में अन्याय को सहने और न्याय के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी है. " गुरुकुल " में सिक्खों के बलिदान पूर्ण आख्यान है. इसके द्वारा

---

1. हिन्दी कविता में युगान्तर- डा० सुधीन्द्र, पृ. 142

भारत को सैनिक-शक्ति अथवा शारीरिक शक्ति की अपेक्षा आत्मिक शक्ति एवं मानसिक बल की श्रेष्ठता का मंत्र दिया है. " नहुष " के द्वारा कवि ने समूचे राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुँचने के लिए प्रेरणा दी है.

" अर्जन और विसर्जन " के द्वारा राष्ट्र को यह शिक्षा दी कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए बड़े से बड़ा त्याग भी करना चाहिए. " काबा और कर्बला " के द्वारा कवि ने हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को सुदृढ़ बनाया है. " विश्व-वेदना " में कवि ने अधिक कर लगाने की नीति का विरोध किया है. " अजित " में उन्होंने जमींदारों एवं पुलिस के अत्याचारों की घोर निन्दा की है. इसके बाद " अंजलि और अर्घ्य " में महात्मा गांधी के निधन पर आँसू बहाये हैं. और राष्ट्रपिता के विशिष्ट गुणों, विविध उपकारों एवं उनके कार्यों से प्रजा को परिचित कराया. देशवासियों की कृतघ्नता पर क्षोभ भी प्रकट किया है.

" जयभारत " में कवि ने " महाभारत " के आख्यानों को नवीन दृष्टि प्रदान की है. भारत के अतीत का गौरव-गान किया है तथा मानवता के आदर्श को अपनाया है. " राजा-प्रजा " में शासक और प्रजा के कर्तव्यों का उल्लेख किया है. इसप्रकार गुप्तजी की रचनाओं में राष्ट्रीय काव्यधारा का क्रमिक विकास हुआ है. " साकेत " में गुप्तजी की राष्ट्रीय भावना अतीत गौरवगान के रूप में, मातृभूमि वन्दना के रूप में, स्वतन्त्रता संग्राम के रूप में आदि विभिन्न रूपों में मिलती है. " साकेत " में वर्णित राम-रावण युद्ध भी राष्ट्रीय युद्ध के रूप में वर्णित है.

रवीन्द्रनाथ की " गीतांजलि" और " नैवेद्य " की भावनाओं की पूर्ण प्रतिष्ठा आधुनिक भक्ति परक कविताओं में हुई है. " झंकार " के गीत रवीन्द्रनाथ द्वारा प्रभावित इसी भावधारा का परिणाम है. कवि का आराध्य भारतीय उपनिषदों का सगुण-साकार ब्रह्म है. इसी साकार सर्वव्यापी ब्रह्म की भक्ति-भावना से अनुप्राणित उनके गीत हैं. वस्तुत: " झंकार " के सभी गीतों में भक्त का हृदय व्यक्त हुआ है.

" द्वापर " की कथा भागवत के दशमस्कन्ध के तेइसवें अध्याय से ली गई है, इसके सर्गों का नामकरण भी पात्रों के नामों के आधार पर हुआ है, इसका कारण यह है कि यह काव्य आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है,

गुप्तजी नारी स्वभाव के विशेषज्ञ थे, कवि ने नारी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने पाँवों के बल खड़ा किया है, नारी पुरुषों के बराबर कदम बढ़ाकर चल सके, स्वतंत्र अस्तित्व रखकर भी स्फूर्तिदायक हो, इस कल्पना को मूर्तिमान करने के लिए कवि को भारत के प्राचीन नारी चरित्रों से प्रेरणा मिली है, नारी विश्व की मधुर कल्पना है, भारतीय परम्परा में उसे पुरुष की अनिवार्य आवश्यकता के रुप में देखा गया है, वह बौद्धिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में भी उच्च है, उसमें हृदय की विशालता एवं सहानुभूति होती है, नारी गुप्तजी की समस्त रचनाओं में चित्रित हुई है, " रंग में भंग " नववधू के त्याग और उसके वीरत्व की कहानी है, " जयद्रथ-वध " में उतरा अभिमन्यु को युद्ध के लिए प्रेरित करती है और अभिमन्यु की मृत्यु के बाद वह विलाप भी करती है, " शकुन्तला " में कवि का नारी सम्मान का भाव व्यक्त हुआ है,

" पंचवटी " में नारी सबला के रुप में आई है, " सैरन्ध्री " में सैरन्ध्री असहाय हो जाती है फिरभी उसका धर्म द्वारा रक्षण होता है, " वक-संहार " में कुन्ती का माता के रुप में चित्रण हुआ है, " द्वापर " में यशोदा, कुब्जा और गोपिकाओं का हृदय व्यक्त हुआ है, गुप्तजी के नारी पात्रों का विरह,पत्नीरुप, मातृत्व,स्वाभिमान आदि अपूर्व है, " साकेत " में सीता, उर्मिला, कौशल्या, सुमित्रा का उज्ज्वल पक्ष है, इसके अलावा कवि ने पुत्रों से उपेक्षित कैकयी को भी ऊपर उठाया है, " सिद्धराज " में राजमाता मीनलदे सिद्धराज को शिक्षा ही नहीं देती है, वह स्वयं तपस्विनी के रुप में भी आती है, रानकदे पति की मृत्यु के बाद उतरा से भी अधिक संतप्त हो उठी है, वही रानकदे जयसिंह के मुँह से प्रेम जैसे पावन शब्द को सुनना भी नहीं चाहती है,

गुप्तजी के मुक्तक काव्यों में भी नारी चित्रण हुआ है. एक ओर सुमित्रा, विदुला, कुन्ती जैसी माताएँ हैं. सावित्री, सुकन्या, अनुसूया, दमयन्ती, गांधारी जैसी पतिपरायणा पत्नियाँ हैं, वहीं दूसरी ओर कोल्हू के बैल की तरह काम करनेवाली गुगीन नारियाँ भी हैं जिन्हें भरपेट अन्न भी नहीं मिलता. विधवा-जीवन, बाल-विवाह, वृद्ध- विवाह, कन्या-विक्रय से गुप्तजी अत्यन्त व्यथित दिखाई देते हैं. नारी के दैन्य ने कवि के हृदय में करुणा का संचार किया है. और उनकी काव्य कला की सेवाओं का नियोजन किया है. कवि ने नारी के विविध रूपों की व्याख्या भी की हैं. गुप्तजी की नायिका नैन नचानेवाली या छाले पड़ने के डर से गुलाब के झाँवा का प्रयोग करनेवाली नहीं है. उनके नारी-पात्र विरह की चरम अनुभूति का अनुभव करते हैं. लेकिन उनका वियोग पलंग पर करवटें बदलनेवाला नहीं है. बिहारी की नायिका की भाँति गुप्तजी की नायिका की " इत आवत चलि जाति उत " जैसी दशा भी नहीं है. हाव-भावों की तथा केश-कलापों की चंचलता भी यहाँ नहीं मिलती है. गुप्तजी ने रीतिकाव्य की सड़ी-गली संकुचित गलियों में भटकती हुई नारी को पुन: भारतीय गौरव प्रदान किया है. उनके नारी पात्रों में हृदय की भावनाएँ व्यक्त होने के कारण वे छल, कपट, द्वेष आदि दुर्गुणों से दूर हैं. उनमें प्रेम, दया, करुणा, सहानुभूति हैं. वे पति के मार्ग में बाधा बनना भी नहीं चाहती है.

ऊर्मिला, यशोधरा आदि विरह में तपकर स्वर्ण- सी चमक उठी है. " यशोधरा " में " साकेत " की उर्मिला की विरहव्यथा का विकास हुआ है. " यशोधरा " में मातृहृदय का चित्रण भी हुआ है. इसमें यशोधरा के निरवधि वियोग को प्रधानता दी गई है. अर्थात्, " यशोधरा " तक आते आते गुप्तजी ने अपनी कृतियों में गृहीत भावक्षेत्र का विस्तार किया है. इसमें नारी का विश्वव्यापी रूप है, यशोधरा ने गौतम की साधना में अपने को उसकी सह-धर्मिणी के रूप में प्रस्तुत किया है. वह उन्हें बाँधकर रखना नहीं चाहती है. वह तो मरने का अधिकार भी पति से माँगती हैं. ये नारियाँ अबला होने पर भी, अवसर पड़ने पर सबला हो जाती हैं. निरन्तर आँसू बहानेवाली उनकी नारियाँ

घोर कष्ट भी उठाती हैं. द्रौपदी भीमसेन को प्रतिशोध भावना से उद्दीप्त करती है. उनके प्रेम में जितनी गहराई है उतनी रूद्रता भी है. पुरूषों के तिरस्कार को सहकर अबला प्रबला हो उठती है. मातृ-रूप प्रधान होने से इनमें वात्सल्य भाव की प्रधानता रही है. मीनलदे पति का ध्यान करती है और पुत्र सिद्धराज के लिए शुभकामना करती है. यशोधरा भी पुत्र राहुल के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करती है और पति के लिए रोती है. बुद्ध के " महाभिनिष्क्रमण " के बाद यशोधरा कभी वियोग को कोसती है, कभी प्रियतम के अविश्वास पर क्षुब्ध हो जाती है कि क्या वह इतनी स्वार्थिनी थी कि सिद्धार्थ को रोक लेती ? बादमें, अपने मन को समझाती है कि अब आर्यपुत्र के बाद उसकी बारी है. अंतमें उसका अन्तर्द्वन्द्व विश्व के सुख का आधार बन जाता है." साकेत " में राम, सीता वन जाने का निश्चय कर लेते हैं. लक्ष्मण भी उसके साथ जानेवाला था. तब उर्मिला के मन में संघर्ष होता है, " मैं इनसे क्या कहूँ ? मैं क्या करूँ ? चलूँ की रहूँ ? " इस निश्चय-अनिश्चय में नारी का हृदय स्पन्दित होता है. इसमें कवि की पूर्णता है. वह पात्र के मन में उतरकर उसके अनुरूप भाव का अनुभव करता है. गुप्तजी ने उपेक्षित नारियों को अपने काव्य में अमर किया है . राम को कौशल्या से अधिक प्यार करनेवाली कैकयी निष्ठुर बन गयी है. द्रौपदी छाती तान कर खड़ी हो गयी जो सिर झुकाकर चलती थी. उनकी कैकयी सामान्य धरातल से ऊपर उठकर सहानुभूति प्राप्त करती है. नारी पात्रों के जीवन में करुणा की एक अन्तर्धारा प्रवाहित होती रहती है. किसी पात्र में वह तीव्र हो गई तो किसी में बीच में परिलक्षित होती है. सुखी, शान्त जीवन व्यतीत करनेवाली नारियों के जीवन में भी करुणा के क्षण आते हैं और वे सुख में भी दुःख का अनुभव करती हैं. ऊर्मिला, यशोधरा, विष्णुप्रिया - इन तीनों में से विष्णुप्रिया अनेक विवशताओं से घिरी परित्यक्ता नारी है. उसका विरह न तो सावधि है और न तो उसे उज्ज्वल मातृत्व मिला है. यह नारी दुःखों से अभिशप्त है. ऊर्मिला, यशोधरा, विष्णुप्रिया उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है जिनके पति संन्यासी होकर नारियों को निरसंबल छोड़ गए हो. इन तीनों में एक ही व्यक्तित्व का क्रमिक विकास हुआ है. उर्मिला और यशोधरा के व्यक्तित्व प्रखर है. और विष्णुप्रिया का व्यक्तित्व विनम्र रमणी का है.

द्विवेदीयुग की नारी शक्ति का अवतार है. उनके नारी पात्र शिक्षित, कलाप्रवीण एवं वाक्पटु है. मध्ययुगीन नारी के समान वह न तो पूज्या है और न तो दासी है. वह पुरूष की सहगामिनी ,सहयोगिनी एवं सहधर्मिणी है.

जिस प्रकार कवि के काव्य का क्रमशः विकास हुआ है, उसी प्रकार नारी-चित्रण में भी उनका कवित्व स्थूल से सूक्ष्म होता गया है. " रंग में भंग " में नारी का जो रूप मिलता है वह " द्वापर " या " सिद्धराज " में नहीं है. " पंचवटी " और " अनघ " तक कवि के नारी पात्र गौण थे . " साकेत " और यशोधरा " में उनकी प्रधानता हो गई है. वस्तुतः ऊर्मिला, यशोधरा की सृष्टि कर गुप्तजी नारी स्वभाव के विशेषज्ञ पद के अधिकारी बन गये है.

आधुनिक युग में प्रकृति- चित्रण दो रूपों में विकसित हुआ है, एक तो स्वतन्त्र चित्रण के रूप में और दूसरे मानवीय संवेदनाओं की पीठिका के रूप में. गुप्तजी ने अधिकांश दूसरे प्रकार का चित्रण किया है. मानवीय संबंधों के कवि होने के कारण गुप्तजी ने मानवीय संवेदनाओं को उभारने के लिए प्रकृति का सहारा लिया है. गुप्तजी मानव की आन्तरिक प्रकृति के उद्घाटक है, बाहय प्रकृति के नहीं. अतः जहाँ भी बाहय जगत की प्रकृति मानव की आन्तरिक प्रकृति के उद्घाटन में सहायक हो सकती है वहाँ कवि ने उसको अपनाया है. इसीलिए गुप्तजी के काव्य में प्रकृति मानवीय संवेदनाओं और क्रियाओं से प्रभावित है. कवि मनुष्य और प्रकृति के बीच संबंध स्थापित करना चाहता है. उन्होंने प्रकृति के उपादानों को उद्दीपन के बदले मनुष्य की भावनाओं एवं संवेदनाओं के मेल में देखा है. " साकेत ", " यशोधरा ", " द्वापर " आदि काव्यों में षट्ऋतु वर्णन हुआ है. यह ऋतु-वर्णन भी पुरानी परिपाटी से भिन्न है. उनके प्रकृति चित्रण में जो संवेदनशीलता है वही ऋतुवर्णन में भी है. नायिका ऋतुओं के साथ इसप्रकार तादात्म्य स्थापित करती है कि वह प्रकृति का अंग बन जाती है. " यशोधरा " का ऋतुवर्णन अधिक संवेदनशील और मानवीय है. गुप्तजी ने पतझड़ का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है. गौतम के

त्याग से प्रभावित होकर वृक्षों ने पत्तों का भी त्याग कर दिया. संक्षेप में प्रकृति-चित्रण में कवि ने देश काल का ख्याल रखा है. कवि को प्रकृतिके बाह्य रुप ने उतना आकर्षित नहीं किया है जितना उसके कार्य-कलापों ने. गुप्तजी का प्रकृति- चित्रण सहज, मनोहारी एवं संवेदनीय हैं, जो मानव हृदय से अपना संबंध स्थापित करता है.

" अंजलि और अर्घ्य " महात्माजी के जीवन की प्रमुख घटनाओं को लेकर लिखी गई रचना है. बापू के निधन से समस्त राष्ट्र अपार वेदना का अनुभव कर रहा था. गुप्तजी ने अपनी वेदना बापू के प्रति समर्पित की है. गुप्तजी के साधु, सौजन्यपूर्ण व्यक्तित्व का परिचय शोक की सघन अभिव्यक्ति में मिलता है. भारतीय संस्कृति और गांधीजी एक दूसरे से अविच्छिन्न और अभिन्न हैं. गुप्तजी की कृतियों में इनका सन्निवेश हुआ है. विश्व वेदना और मानवता प्रेम से गांधीजी अभिभूत हुए और उन्होंने राम, कृष्ण, बुद्ध आदि को पुरुषोत्तम के रुप में देखा तथा भारतीय ढंग और परंपरा के रक्षक रुप में उन्हें प्रस्तुत किया. महात्माजी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर गुप्तजी ने " भारत-भारती " की रचना की. अपने देश, अपनी जाति और अपने कर्तव्य के प्रति प्रेरणा देने का कार्य जैसा " भारत-भारती " ने किया वैसा अन्य किसी रचना ने नहीं किया. गुप्तजी के जीवन का लक्ष्य पुरुषार्थ है. उनके मतानुसार जीवन के अंतिम क्षण तक कर्तव्यपालन करना चाहिए. इसे गांधीवाद का प्रभाव कहा जा सकता है. उनकी मनोकामना सबके कल्याण की है. बापू की भाँति गुप्तजी में भी वैष्णवता समाविष्ट है. गुप्तजी ने गांधीजी की भाँति दलितवर्ग के प्रति सहानुभूति प्रकट की है. नारी की ममता, आत्मयातना, अपमान, अबला जीवन की करुण कहानी को उन्होंने सहानुभूतिपूर्ण भावना से व्यक्त किया है. उनके नारी पात्रों में आदर्शवादिता के साथ नैतिकता भी मिलती है. गांधीजी के आदर्शों का प्रभाव उनके आन्दोलनों में भारतीय जन-जीवन पर पड़ा था. गुप्तजी ने उसको " यशोधरा " में तथा " साकेत " की ऊर्मिला और कैकयी आदि के चरित्रों में उभारा है. ऊर्मिला सैनिकों को अहिंसा

की शिक्षा देती है. सीता चरखा एवं तकली से सूत कातती है. वह स्वावलम्बिनी बनकर खुरपी और कुदाली से खेती को भी निराती है. कैकयी अपने कर्मों के लिए पश्चाताप करती है. और इसप्रकार उसका हृदय-परिवर्तन होता है. यह गांधी-विचारधारा का ही प्रभाव है. संयमशीलता भी गांधीवाद की ही देन है. गुप्तजी के समय में नारी जागरण के अथक प्रयत्न भी हुए हैं. गांधीवाद का यह एक प्रयत्न था कि नारी की उन्नति और विकास के साथ-2 उसे अधिकार भी दिये जाये. पति-पत्नी को समानता का अधिकार होना चाहिए. अतएव प्राचीन कथानकों को लेकर गुप्तजी ने अपने युगधर्म का निर्वाह किया है. " जयभारत " का युधिष्ठिर मानववाद की प्रतिष्ठा से सम्पन्न है. पश्चाताप दग्ध कर्ण, भ्रातृ-भक्ति से भरा हुआ दुःशासन, धैर्य और अडिगता से युक्त दुर्योधन आदि मानवता सुलभ गुणों और अवगुणों को लिए हुए हैं. उनके दोषों का परिहार किया गया है और उन्हें मानवोचित बनाया गया है. " जयभारत " का युधिष्ठिर मानवता का प्रतीक है. इसमें मानवता की ही जय होती है. युधिष्ठिर के चरित्रांकन के साथ-2 सत्य, अहिंसा, प्रेम तथा समता आदि का भी विविध स्थानों पर वर्णन किया है, जो गांधी विचारधारा से प्रभावित है. गुप्तजी की सिद्धि गांधी विचारधारा को व्यवहारिक रूप देनेमें हैं. गुप्तजी पर गांधीजी का प्रभाव स्थायी छाप छोड़ सका है. गांधीजी की सबके सुख की और सबको निरामय बनाने की प्रेरणा गुप्तजी के राम में साकार हो उठी है. गुप्तजी के महान कर्तृत्व पर गांधीजी के तपःपूत जीवन और उनकी विचारधारा का व्यापक प्रभाव पड़ा है.

हिन्दी कविता के क्षेत्र में, खड़ीबोली के विकास में, मैथिलीशरण गुप्त का एक ऐतिहासिक स्थान एवं महत्व है. वैसेतो, खड़ीबोली के प्रयोगात्मक संकेत अपभ्रंश ग्रंथों, रासो ग्रंथों, अमीर खुसरो, रहीम, भूषण आदि की कृतियों में मिलते हैं. किन्तु खड़ी बोली जिस रूप में बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक के पश्चात् काव्यभाषा के रूप में अपनाई गई, उसका प्रारम्भिक एवं पूर्ण विकसित रूप गुप्तजी के काव्य में ही सर्वप्रथम प्राप्त होता है. वस्तुतः आधुनिक

काल में खड़ीबोली को काव्योपयुक्त भाषा बनाने का श्रेय गुप्तजी को ही है.

संक्षेप में, हिन्दी- साहित्य को गुप्तजी के काव्य के रूप में ऐतिहासिक- सामाजिक- सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना की अक्षयनिधि प्राप्त हुई है.